

पाठ—12 कंचा
लेखक टी.पद्मनाभन

अप्पू घर से निकलकर कौए और
सियार की कहानी का आनंद लेते हुए
एक दुकान पर पहुँचा।

वहाँ उसने एक जार में कंचे रखे देखे।

कंचे देखकर अप्पू का जिज्ञासु मन
उन्हीं में उलझकर रह गया।

स्कूल में कंचों के खिलाड़ी जार्ज को
देखता है।

कक्षा में पहुँचकर मास्टर जी के पाठ
की ओर ध्यान नहीं देता है।

मास्टर जी के पूछने पर और डाँटने
पर कंचों के बारे में बताता है।

मास्टरजी यह सुनते ही बेंच पर
खड़ा कर देते हैं और वह
सुबक—सुबक कर रोने लगता है।

अप्पू को जॉर्ज की याद आती है और सोचता है कि उसके आने पर वह कंचे खरीदेगा और उसके साथ खेलेगा ।

चपरासी द्वारा फीस जमा करवाने का संदेश आता है ।

अप्पू को फीस के नाम से डेढ़ रुपए की याद आती है ।

अप्पू फीस के पैसों से डेढ़ रुपए के कंचे खरीदता है ।

अप्पू उन कंचों से खेलने में व्यस्त हो जाता है और सड़क पर आने— जाने वालों से भी अनजान होता है ।

कंचों की लकीर देखने के लिए पोटली खोलता है और सड़क पर बिखरा देता है ।

बिखरे हुए कंचों को समेटते देखकर ड्राइवर को भी उसकी बाल—सुलभ चेष्टा पर हँसी आ जाती है ।

अप्पू घर पहुँचकर अपने सारे कंचे अपनी माँ को दिखाता है और बताता है कि उसने फीस के पैसों से कंचे खरीद लिए ।

कंचे देखने पर माँ पहले तो परेशान होती है और बाद में अप्पू की खुशी में खुश हो जाती है ।

अप्पू के चेहरे की खुशी देखकर माँ भी उसके भोलेपन और बालमन पर रीझ जाती है ।